

# डॉ. रॉबर्ट सी. न्यूमैन, सिनॉटिक गॉस्पेल, व्याख्यान 14, फॉर्म आलोचना

© 2024 रॉबर्ट न्यूमैन और टेड हिल्डेब्रांट

खैर, सुप्रभात। हम यहाँ सिनॉटिक गॉस्पेल कोर्स में अपने अंतिम सत्र में आ गए हैं। हमने अब तक ऐतिहासिक यीशु, यहूदी पृष्ठभूमि, व्याख्या का परिचय, कथा शैली, लेखकत्व की तिथि, सिनॉटिक्स की विशेषताएँ, दृष्टांतों की व्याख्या, साहित्यिक कृतियों के रूप में सुसमाचार, सिनॉटिक समस्या, फिलिस्तीन और यरुशलम का भूगोल, चमत्कारों की व्याख्या, सिनॉटिक्स का धर्मशास्त्र, विवाद विवरण, विवाद विवरण की व्याख्या, और अब हम रूप आलोचना और संपादन आलोचना को देखना चाहते हैं।

हम सुसमाचार इतिहास पर कुछ निष्कर्ष के साथ समापन करना चाहेंगे। खैर, हम फॉर्म आलोचना की शब्दावली के बारे में थोड़ा सोचते हैं। फॉर्म आलोचना शब्द किस बारे में है? यह दो जर्मन शब्दों, फॉर्मगेस्चिच्चे, फॉर्म इतिहास, या गैटुंग्सफ़ोर्सचुंग, शोध की शैली का एक मोटा अंग्रेजी अनुवाद है।

फॉर्म आलोचना मौखिक रूप से प्रसारित की गई सामग्रियों का विश्लेषण करने की एक विधि है, जिसका उद्देश्य उनके मूल संस्करणों को पुनः प्राप्त करना है, इस धारणा पर कि उनके साहित्यिक रूपों की पहचान की जा सकती है और उन्हें उनकी आदिम स्थितियों में बहाल किया जा सकता है। हम इसे यहाँ थोड़ा स्पष्ट करने जा रहे हैं। विचार यह है कि कहानियाँ या कहावतें मौखिक रूप से प्रसारित होती हैं, और जैसे-जैसे वे ऐसा करते हैं, उनकी सामग्री और जटिलता पूर्वानुमानित तरीकों से बदलती है, कुछ हद तक मछली के बारे में कहानियों की तरह जो हमेशा बड़ी होती जाती हैं क्योंकि कहानी बार-बार दोहराई जाती है।

खैर, नए नियम में रूप आलोचना का अनुप्रयोग प्रथम विश्व युद्ध के ठीक बाद रुडोल्फ बुल्टमैन से शुरू होता है। सबसे पहले हम रूप आलोचना की पृष्ठभूमि पर थोड़ा नज़र डालना चाहते हैं, और फिर हम वापस आकर इसका विशेष रूप से वर्णन करना शुरू करेंगे। यह दृष्टिकोण, रूप आलोचना, बुल्टमैन के साथ अचानक प्रकट नहीं हुआ, बल्कि बाइबिल अध्ययनों में इसकी एक लंबी पृष्ठभूमि है। उदारवादी विचारों की कई धाराएँ रूप आलोचना में एकजुट हुईं।

सबसे पहले, एफ.सी. बाउर द्वारा चर्च के इतिहास का पुनर्निर्माण। बाउर 19वीं सदी के मध्य और 1800 के दशक के मध्य में एक जर्मन चर्च इतिहास के प्रोफेसर थे। बाउर ने हेगेल के इतिहास के दर्शन को अपनाया और इसे चर्च के इतिहास पर लागू किया।

इस समय, हेगेल का दर्शन और इतिहास, साथ ही विचारों का संघर्ष, यूरोप में बहुत प्रभावशाली था। उन्होंने पूरे इतिहास को एक नए विचार के बीच संघर्ष के रूप में देखा, जिसे उन्होंने थीसिस कहा, जिसने एक काउंटर विचार, एंटीथीसिस को जन्म दिया। उनके संघर्ष ने अंततः कुछ समझौता विचारों को जन्म दिया, जिसे उन्होंने संश्लेषण कहा।

इसलिए, एक थीसिस प्रतिपक्ष के साथ संघर्ष करती है, जिससे संश्लेषण होता है। अधिकांश लोग इस बात से अधिक परिचित हैं कि कार्ल मार्क्स ने इस विचार को सामाजिक वर्गों के बीच संघर्ष पर कैसे लागू किया। बाउर इन विचारों को प्रारंभिक चर्च इतिहास पर लागू करने वाले पहले व्यक्ति थे।

उन्होंने आरंभिक चर्च में दो समूहों के बीच संघर्ष देखा, जिसकी विशेषता इस प्रकार थी। एक ओर यहूदी चर्च। दूसरी ओर गैर-यहूदी चर्च।

पीटर यहूदी चर्च का नेता है। पॉल गैर-यहूदी चर्च का नेता है। यहूदी चर्च में ज्यादातर यहूदी शामिल थे।

गैर-यहूदी चर्च ज्यादातर हेलेनिस्टिक गैर-यहूदी थे। यहूदी चर्च ने यीशु को एक महान चमत्कार करने वाले व्यक्ति और मसीहा के रूप में देखा। गैर-यहूदी चर्च ने यीशु को एक नए रहस्यमय धर्म में ईश्वर के रूप में देखा।

यहूदी चर्च में कानून पर जोर था। गैर-यहूदी चर्च में संस्कारों पर जोर था। यहूदी चर्च में राष्ट्रीय उद्धार, इस्राएल के उद्धार पर जोर था।

गैर-यहूदी चर्च, व्यक्तिगत मोक्ष पर। बुल्टमैन ने बाद में, 20वीं सदी में, दो अलग-अलग प्रारंभिक यहूदी और गैर-यहूदी चर्चों के बाउर के विचारों का उपयोग उन स्रोतों को दिनांकित करने के लिए किया, जिन्हें वह सुसमाचार सामग्री में खोजने का दावा करता है। तो यह पहला तत्व है, अगर आप चाहें, तो बुल्टमैन द्वारा अपने रूप आलोचना में इसका उपयोग किया जाएगा।

दूसरा डेविड फ्रेडरिक स्ट्रॉस का पौराणिक दृष्टिकोण था। आपको याद होगा कि स्ट्रॉस ने 1835 में लेबेन जेसु लिखा था और उन्होंने कहा था कि सुसमाचार का अधिकांश भाग पौराणिक है, खास तौर पर चमत्कारी। उनका मानना था कि सुसमाचार प्रचार के लिए लिखे गए हैं जो धार्मिक सत्य सिखाते हैं, लेकिन वे जिन घटनाओं का वर्णन करते हैं, वे वास्तव में घटित नहीं होतीं।

फॉर्म आलोचक, खास तौर पर बुल्टमैन, स्ट्रॉस का अनुसरण करते हुए सुसमाचारों में बहुत कुछ मिथक के रूप में भी देखते हैं। फिर, हमारे पास तीसरा तत्व है, बर्नार्ड वीस और एचजे होल्त्ज़मैन का दस्तावेजी सिद्धांत। जब हमने सिनॉटिक समस्या के बारे में बात की, तो हमने दो-दस्तावेज़ सिद्धांत का उल्लेख किया।

इसे वेइस और होल्त्ज़मैन ने लोकप्रिय बनाया, हालाँकि आइचॉर्न ने इसे पहले प्रस्तावित किया था। यहाँ, मार्क और क्यू मैथ्यू और ल्यूक द्वारा उपयोग किए जाने वाले स्रोत हैं। फॉर्म आलोचना मार्क और क्यू को सुसमाचार के पीछे साहित्यिक स्रोतों के रूप में देखती है, लेकिन फिर मार्क और क्यू के पीछे मूल आदिम मौखिक सामग्रियों पर वापस जाने की कोशिश करती है।

चौथा तत्व यीशु के चरित्र पर पुराने उदारवादी तर्क हैं। जैसा कि हमने पहले कहा था, सुसमाचारों से चमत्कारों को हटा दिए जाने के बाद, हमारे पास यीशु की परस्पर विरोधी तस्वीरें हैं। कुछ लोग

उन्हें एक नैतिक शिक्षक के रूप में देखते हैं, अन्य एक क्रांतिकारी नेता, या एक भविष्यवक्ता जो कि भविष्यवक्ता के रूप में है, या एक ढोंगी के रूप में।

सुसमाचार सामग्री के कौन से भाग चुने या अस्वीकृत किए जाते हैं, इसका प्रभाव इस बात पर पड़ता है कि ये विभिन्न लोग किस प्रकार के यीशु को देखते हैं। बुल्टमैन और अन्य लोगों को उम्मीद है कि रूप आलोचना तस्वीर को स्पष्ट कर सकती है और वास्तविक ऐतिहासिक यीशु तक वापस पहुँच सकती है। रूप आलोचना के पीछे पाँचवाँ तत्व ब्रेडे और वेलहॉसन का संदेहवाद है।

ब्रेडे और वेलहॉसन ने प्रस्तावित किया कि मार्क और क्यू भी प्रारंभिक चर्च की व्याख्या से प्राप्त धार्मिक रचनाएँ थीं। और इसलिए, अगर यह सच है, तो हमें इन कथाओं के ढाँचे को भंग करना होगा और अलग-अलग बुनियादी कथनों को देखना होगा। और यही वह है जो रूप आलोचना करती है।

लेकिन रूप आलोचना सबसे पहले पुराने नियम में शुरू हुई, और इसलिए यह छठा तत्व है। और यह हमें हरमन गुंकल तक ले आता है। उन्होंने उत्पत्ति और भजन संहिता में छोटी इकाइयों को अलग किया, जिसके बारे में उनका दावा था कि लिखे जाने से पहले ये मौखिक रूप से प्रसारित हुई थीं।

उन्होंने कहा कि उत्पत्ति की इकाइयों में ऐसी किंवदंतियाँ हैं जो नामों की उत्पत्ति को समझने के लिए बनाई गई हैं, चाहे वे स्थान हों या लोग। भजनों की इकाइयाँ पूजा या धार्मिक सामग्री थीं जो विशिष्ट अवसरों या विशिष्ट तीर्थस्थलों के लिए तैयार की जाती थीं। गुंकल ने जीवन की स्थिति को फिर से बनाने की कोशिश की, जिसे जर्मन में सिट्ज़ इम लेबेन के नाम से जाना जाता है, जिसमें ये कहानियाँ या भजन उत्पन्न हुए।

इसके बाद बुल्टमैन ने सिनॉटिक गॉस्पेल में पाई गई इकाइयों के लिए भी ऐसा ही करने की कोशिश की। यह हमें अंततः न्यू टेस्टामेंट में आलोचना के रूप में सामने लाता है। प्रथम विश्व युद्ध के बाद, बुल्टमैन ने गुंकल की विधि को गॉस्पेल पर लागू किया, यानी मार्क और क्यू के ढाँचे से अलग किए गए टुकड़ों पर, जैसा कि ब्रेडे और वेलहॉसन ने सुझाया था।

बुल्टमैन ने दावा किया कि उनकी विधि, रूप आलोचना, पहले की सामग्री को बाद की सामग्री से अलग कर सकती है, गैर-यहूदी स्रोतों को यहूदी स्रोतों से अलग कर सकती है, और इस प्रकार यह निर्धारित कर सकती है कि कौन सी सामग्री वास्तव में यीशु से जुड़ी है। बुल्टमैन के तरीकों को उनके समय से ही परिष्कृत किया गया है। वे जीसस सेमिनार के सदस्यों में अपने सबसे उत्साही अभ्यासकर्ता पाते हैं, जिसका उल्लेख ऐतिहासिक जीसस की हमारी चर्चा में किया गया था।

तो, फॉर्म आलोचना की पृष्ठभूमि पर इतना ही। फॉर्म आलोचना के तरीके। खैर, पूछने के लिए पहला सवाल, मुझे लगता है, यह है कि फॉर्म क्या है? खैर, फॉर्म आलोचना को समझने के लिए, हम मूल बातों से शुरू करते हैं।

ऐसी कई चीजें हैं जिन्हें फॉर्म कहा जाता है, और इनमें से कई का हमारे यहाँ कुछ संबंध है। फॉर्म एक तरह का साँचा होता है जो किसी माध्यम को आकार देता है। उदाहरण के लिए, हमारे पास फुटपाथ और गटर और उस तरह की चीजें बनाने के लिए कंक्रीट डालने के लिए कंक्रीट के फॉर्म हैं।

हमारे पास जेलो सलाद और उस तरह की कुछ अन्य चीजें बनाने के लिए जेलो मोल्ड हैं। हम इन्हें भौतिक रूप कह सकते हैं। सादृश्य से, तब हमारे पास भाषा के रूप भी होते हैं, और भाषा के रूप भी किसी माध्यम को आकार देते हैं, लेकिन यहाँ माध्यम भाषा है।

इन फॉर्म में कुछ शब्द स्थिर रहते हैं, जो फिर फॉर्म बन जाते हैं, और फिर अन्य शब्दों को बदल देते हैं, जिनके बारे में हम सोच सकते हैं कि वे सामग्री हैं जिन्हें हम फॉर्म में डालते हैं। और इसलिए ये फॉर्म विभिन्न अनुप्रयोगों के लिए उपयोगी होते हैं। जब हम फॉर्म भरने की बात करते हैं तो हम अभी भी इसके बारे में सोचते हैं जो कि काफी आम है।

तो, आपके पास एक आवेदन पत्र है, और यह किसी नौकरी या कॉलेज या किसी अन्य चीज़ के लिए आवेदन के लिए सेट किया गया है, और इसमें कुछ निश्चित फॉर्म, तय की गई चीज़ें, नाम, पता, आदि हैं, और वे क्या हैं यह इस बात पर निर्भर करता है कि यह किस तरह का फॉर्म है। कुछ उदाहरण जिन्हें शायद फॉर्म नहीं कहा जाता है, एक विनम्र परिचय एक फॉर्म है। आपके पास किसी व्यक्ति के नाम के लिए एक तरह की जगह है, और फिर मैं चाहता हूँ कि आप मिलें, और फिर आप वहाँ किसी अन्य व्यक्ति का नाम डालें, ताकि आप विनम्रता से बता सकें कि आप किसी का परिचय कैसे देते हैं।

यदि आप चाहें तो उपदेश साहित्यिक रूप या मौखिक रूप भी हो सकता है। यदि आप चाहें तो इसके कुछ अलग रूप हो सकते हैं, यदि आप चाहें तो इसके रूप भी हो सकते हैं, यह इस बात पर निर्भर करता है कि यह पाठ्य उपदेश है, विषयगत उपदेश है या व्याख्यात्मक उपदेश है। शास्त्रीय उपदेश के रूप में एक परिचय, एक मुख्य भाग और एक निष्कर्ष होता है, और मुख्य भाग, विशेष रूप से एक शास्त्रीय उपदेश के लिए, तीन बिंदु बनाने चाहिए और इसमें दृष्टांत और उपदेश शामिल होने चाहिए।

निष्कर्ष कविता या प्रार्थना या वेदी आह्वान में समाप्त हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि धर्मोपदेश किस विशेष ईसाई संप्रदाय या पृष्ठभूमि में दिया जा रहा है। किसी रूप को पहचानने के लिए एक अच्छा परीक्षण यह है कि क्या इसकी नकल या पैरोडी की जा सकती है? उदाहरण के लिए, मैरी हैड ए लिटिल लैम्ब पर एक पाठ्य उपदेश, जिसे मैंने कुछ अवसरों पर सुना है, उस तरह की चीज़ का एक उदाहरण है। हमें कानूनी या वित्तीय रूप भी मिलते हैं।

उदाहरण के लिए, यदि आप अपनी चेकबुक निकालकर देखें, तो चेक पर निश्चित शब्द और बहुत सारे रिक्त स्थान होते हैं, और यह मूल रूप से आपके बैंक को भेजा गया एक छोटा सा ज्ञापन या पत्र होता है, और इस पर तारीख लिखी होती है ताकि बैंक देख सके कि यह लंबे समय से है या नहीं, और यह बताता है कि आपने चेक का भुगतान किसको और कितना किया है, और इसके लिए दो जगह होती हैं ताकि प्राप्तकर्ता चेक को किटिंग से बचा सके, कुछ अतिरिक्त नंबर

चिपकाकर इसे बड़ी राशि न बना सके, और फिर इस पर आपका हस्ताक्षर होता है, और हाल ही में चेक पर, निश्चित रूप से, बैंक का नाम और नीचे सभी प्रकार के रूटिंग नंबर और उस तरह की चीजें भी होती हैं। एक विलेख या वसीयत भी कानूनी रूपों के उदाहरण होंगे। अंग्रेजी में, हमारे पास कविता में साहित्यिक रूप हैं।

उदाहरण के लिए, एक सॉनेट चौदह पंक्तियों का होता है, और इसे आयंबिक पेंटामीटर नामक एक विशेष मीटर और उसके गीत में होना चाहिए। यह प्रेम या प्रकृति की सुंदरता या उस तरह के किसी विषय के बारे में होता है और अक्सर इसमें एक निश्चित तुकबंदी योजना होती है। तो, यहाँ 19वीं सदी के एक काफी प्रसिद्ध भजन लेखक फ्रांसिस रिडले हैवरगिल द्वारा एक ईसाई सॉनेट है।

प्रेम परमानंद में तब पराकाष्ठा पर पहुँचता है जब वह एक श्वेत, अविचल, भय-भस्म करने वाली चमक तक पहुँच जाता है, और यह जानते हुए कि, यह जैसा जानता है, उसे किसी आश्वासन भरे शब्द या सुखदायक भाषण की आवश्यकता नहीं होती। यह केवल मौन निकटता चाहता है, ताकि विश्राम कर सके। कोई आवाज़ नहीं, कोई हलचल नहीं, प्रेम न सुना जाए बल्कि महसूस किया जाए, लंबे समय तक और लंबे समय तक जब तक कि समय पिघल न जाए, अनन्त सागर की छाती पर एक हिमकण।

क्या इस मौन के क्षणों ने तुम्हारे अतीत को चमकाया है, स्मृति को गौरव से भरा स्थान बनाया है, वह सारी खुशियाँ सिखाई हैं जो नश्वर परिजन खोज सकते हैं? अधिक प्रकाश से, यह केवल एक छाया है। इसलिए तुम्हारा भगवान तुम्हारे ऊपर आनन्दित होगा, और उसके प्रेम में विश्राम करेगा और चुप रहेगा। स्पेक्ट्रम के दूसरे छोर पर, हमारे पास लिमेरिक्स है, जो एक पाँच-पंक्ति की हास्य कविता है।

तीन पंक्तियाँ, पहली, दूसरी और पाँचवीं, उनके मीटर में तीन फ़ीट हैं, और वे तुकबंदी करती हैं। और दो पंक्तियाँ, तीसरी और चौथी, दो फ़ीट छोटी हैं, और वे तुकबंदी करती हैं। और पाँचवीं पंक्ति पंचलाइन है।

ब्राइट नाम की एक युवती थी, जो प्रकाश की गति से भी अधिक तेज यात्रा करती थी। वह एक दिन सापेक्ष तरीके से यात्रा पर निकली और पिछली रात को वापस लौट आई। मेरे एक छात्र ने यह कविता लिखी थी।

न्यूमैन नाम का एक प्रोफेसर था, जो अपनी बुद्धि और कुशाग्रता के लिए जाना जाता था। उसने एक परीक्षा दी, लेकिन सभी ने अनुमान लगा लिया, इसलिए वह बिना गुस्सा किए ही फेल हो गया। यह जॉन ब्लूम द्वारा किया गया था, जो मेरे पूर्व छात्रों में से एक था।

खैर, अगर आप चाहें तो ये साहित्यिक रूपों के उदाहरण हैं। आइए बुल्टमैन और अन्य रूप आलोचकों द्वारा किए गए दावों पर एक नज़र डालें। वे कहते हैं, हाँ, ठीक है, लिखित और मौखिक साहित्य में रूप हैं, तो बुल्टमैन का दावा है कि हम उनके साथ क्या कर सकते हैं? यहाँ बुल्टमैन-प्रकार के रूप आलोचकों के विशिष्ट दावे दिए गए हैं।

कुछ विधा आलोचक उनसे ज़्यादा रूढ़िवादी हैं, लेकिन बुल्टमैन न्यू टेस्टामेंट के अध्ययन में अब तक का सबसे बड़ा प्रभाव है। इसलिए, बुल्टमैन और उस तरह के अन्य लोग इस बात पर ज़ोर देते हैं। एक, सुसमाचार लिखे जाने से पहले मौखिक परंपरा का दौर था, और ज़्यादातर लोग इस बात से सहमत होंगे कि कुछ समय तक मौखिक परंपराएँ मौजूद थीं।

बुल्टमैन मौखिक संचरण की दो पीढ़ियों के लिए तर्क देते हैं, ईसा से लेकर संभवतः 70 से 100 ई. तक। दूसरे, मौखिक संचरण के उस समय के दौरान, सुसमाचार की बातें और कथाएँ स्वतंत्र इकाइयों के रूप में प्रसारित हुईं। और फिर तीसरा, इन इकाइयों को उनके स्वरूप के आधार पर समूहों में वर्गीकृत किया जा सकता है। आम तौर पर, तीन समूह होते हैं; कुछ में अधिक होंगे, और आप स्पष्ट रूप से समूहों को उप-विभाजित कर सकते हैं।

इनमें से एक समूह एक कहावत है, यीशु का एक अलग कथन, जिसका कोई कथात्मक समर्थन नहीं है। दूसरा एक कहावत है, एक कहावत है, या एक तीखी सारगर्भित कहावत है जिसके इर्द-गिर्द एक कहानी है जो आपको इसका मतलब समझने में मदद करती है या आपको पंचलाइन या उस तरह की कोई चीज़ समझने में मदद करती है। और तीसरा, एक चमत्कार की कहानी, एक चमत्कारी घटना का आख्यान।

चौथा, बुल्टमैन और अन्य लोगों का दावा है कि प्रारंभिक चर्च ने न केवल इनमें से कई इकाइयों को संरक्षित किया बल्कि व्यावहारिक जरूरतों को पूरा करने के लिए उनका आविष्कार भी किया। और इसलिए, प्रत्येक इकाई के जोर को जानकर, हम इसके स्रोत का पता लगा सकते हैं और दिखा सकते हैं कि इनमें से कई यीशु से वापस नहीं जाते हैं। तो, इनमें से एक यह है कि फिलिस्तीनी या यहूदी चर्च ने यीशु को अपने मसीहा के रूप में देखा और मनुष्य के पुत्र के रूप में उनकी वापसी की उम्मीद की।

तो, इस तरह की सामग्री यहूदी चर्च की पृष्ठभूमि की ओर इशारा करती है। दूसरी ओर, हेलेनिस्टिक गैर-यहूदी चर्च ने यीशु को अपने नए रहस्यमय धर्म के पंथ के स्वामी या देवता के रूप में देखा और पवित्र आत्मा के साथ अपने वर्तमान संवाद पर जोर दिया। इसलिए, प्रारंभिक चर्च ने इनमें से कई को संरक्षित और आविष्कार किया।

पांचवां, इन सामग्रियों का वास्तविक जीवनी, कालानुक्रमिक या भौगोलिक मूल्य बहुत कम या बिलकुल नहीं है। जिस हद तक उनके पास ये हैं, वह वास्तव में, क्या कहें, प्रामाणिक नहीं है। इसलिए, इन क्षेत्रों में वे जो कुछ भी आपको बताते हैं, वह बाद में मौखिक परंपरा में जोड़ा गया था या मार्क ने अपने ढांचे या इस तरह से फिट होने के लिए बनाया था।

बाल्टीमोर और इस तरह के लोग बताते हैं कि यह प्रवृत्ति लोककथाओं में देखी जाती है। इसलिए, जैसा कि हम सोचते हैं, जॉर्ज वाशिंगटन के बारे में कहानियाँ अनैतिहासिक विवरणों से सजी हुई हैं, जैसे कि पोटोमैक नदी के पार एक डॉलर फेंकना या ऐसा कुछ। यहाँ इस निहितार्थ पर ध्यान दें कि प्रारंभिक चर्च सत्य के साथ लापरवाह था और अपनी कहानियों का उपयोग प्रचार उद्देश्यों के लिए करता था।

पांचवां, प्रत्येक परंपरा इकाई का मूल संस्करण पुनः प्राप्त किया जा सकता है, और परंपरा को नियंत्रित करने वाले नियमों का उपयोग करके इसके मौखिक इतिहास का पता लगाया जा सकता है। खैर, ये नियम क्या हैं? वे कहानियों आदि के विकास को देखने से प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए, ग्रीक और यहूदी साहित्य में परंपराएँ।

अरिस्टियास का पत्र पुराने नियम में सेप्टुआजेंट अनुवाद की उत्पत्ति का पता लगाता है। और जब आप बाद के लेखकों में सेप्टुआजेंट की उत्पत्ति की कहानी सुनते हैं, तो यह विभिन्न तरीकों से अलंकृत हो जाती है, जैसा कि फिलो या जोसेफस या चर्च के पिता या अन्य लोगों द्वारा बताया गया है। आप यह भी देख सकते हैं कि यह तल्मूडिक और अन्य यहूदी धार्मिक साहित्य में दृष्टांतों में कैसे विकसित होता है, जहाँ आप अक्सर अलग-अलग रब्बी साहित्य में एक ही दृष्टांत के कई संस्करण देखते हैं।

या अपोक्रीफल गॉस्पेल, जैसा कि वे कैनोनिकल गॉस्पेल से उधार लेते हैं। या कैनोनिकल गॉस्पेल, मैथ्यू और ल्यूक, जैसा कि वे मार्क और क्यू से उधार लेते हैं। तो ये वे स्थान होंगे जिनका उपयोग बुल्टमैन और अन्य लोग अपने नियमों को विकसित करने के लिए करेंगे कि परंपरा विभिन्न मौखिक कथनों की सामग्री को कैसे बदलती है। खैर, यह फॉर्म आलोचकों की धारणा है।

फिर, हम उनकी प्रक्रिया पर थोड़ा नज़र डालते हैं। इन कथनों का उपयोग करते हुए, फॉर्म आलोचक प्रत्येक इकाई को उसके सबसे आदिम रूप में संसाधित करते हैं और फिर यह तय करने का प्रयास करते हैं कि वह इकाई यीशु से जुड़ी है या नहीं। इसलिए, उनका पहला कदम कहानियों और कथनों को संदर्भ से अलग करना है, जिसे विशुद्ध रूप से संपादकीय आविष्कार माना जाता है।

इसलिए, वे मानते हैं कि मैथ्यू और ल्यूक दोनों ही मार्क का उपयोग करते हैं, और इसलिए वे मूल रूप से इन उपाख्यानों को निकालने की कोशिश करते हैं, यदि आप चाहें, या ये कहावतें, और यदि आवश्यक हो, तो मूल रूप में वापस लाने के लिए उन्हें थोड़ा छोटा कर देते हैं। ऐसा करने के लिए, वे प्रत्येक कहानी या कहावत की मूल या आदिम स्थिति को पुनः प्राप्त करने के लिए परंपरा के नियमों का उपयोग करते हैं। इसके लिए, एक आदिम कथा को एक दृश्य, एक छोटी समय अवधि, केवल दो या तीन पात्रों और मौजूद किसी भी समूह द्वारा एक इकाई के रूप में कार्य करने की विशेषता कहा जाता है।

दरअसल, हम अक्सर ऐसी चीजें देखते हैं। ये कहानी कहने की विशेषताएं हैं, ठीक है? और चाहे वे कहानियाँ ऐतिहासिक कहानियाँ हों या नहीं, कुछ बताने के लिए हमें समझने योग्य, दिलचस्प तरीके से क्या कहना चाहिए? अगर आप चाहें तो ये सामान्य विशेषताएं हैं।

बुल्टमैन और अन्य लोगों के अनुसार, कथा के विकास में विस्तार को बढ़ाना और विवरण को अधिक स्पष्ट बनाना, उन जगहों पर नाम जोड़ना जहाँ कोई मूल नहीं था, अप्रत्यक्ष प्रवचन को प्रत्यक्ष प्रवचन में बदलना और चमत्कारी तत्वों को जोड़ना शामिल है। तो मूल रूप से, इन्हें प्रत्येक कथन या कथन कहानी या चमत्कार कहानी के लिए सबसे आदिम रूप में वापस लाने की

कोशिश करने के लिए लागू किया जाता है। और फिर, पाँचवाँ, तीसरा, क्षमा करें, आप यह तय करने का प्रयास करते हैं कि इस आदिम रूप के लिए कौन सा प्रारंभिक समूह जिम्मेदार था।

संभावनाएँ? प्रारंभिक चर्च, यहूदी या गैर-यहूदी, यहूदी या यीशु, है न? जैसा कि हमने पहले कहा, मार्टिन लूथर कैथोलिक चर्च से निकले और लूथरनवाद की शुरुआत की। तो, यीशु यहूदी धर्म से निकले और ईसाई धर्म की शुरुआत की। इसलिए, इन अन्य संभावित समूहों को उम्मीदवार माना जाता है।

यह तय करने के लिए किस तरह के मानदंड का इस्तेमाल किया जाएगा कि वे यीशु की ओर वापस जाते हैं या नहीं? उनमें से एक है बहु-प्रमाणीकरण। अगर कोई फॉर्म मार्क और क्यू दोनों में दिखाई देता है, तो उसके यीशु की ओर वापस जाने और असंगति की संभावना अधिक है।

यीशु ने वास्तव में वे बातें कहीं, जिनके बारे में हम कल्पना भी नहीं कर सकते कि कोई अन्य प्रारंभिक स्रोत क्या कहता - उदाहरण के लिए, कैसर को कर देना। यहूदियों को कर देना पसंद नहीं था।

ईसाइयों को कर देना पसंद नहीं था। इसलिए, इसका श्रेय यीशु को जाता है। खैर, मूल रूप से यही बात हमारे यहाँ है।

खैर, अब हम फॉर्म आलोचना के अनुप्रयोग के कुछ नमूने देखते हैं। सबसे पहले, हम वापस जाएंगे और उन बुनियादी रूपों के बारे में थोड़ी बात करेंगे जिन्हें हमने पहचाना है। आम तौर पर, सुसमाचार सामग्री में तीन बुनियादी रूपों की पहचान की जाती है, हालांकि कुछ आलोचकों के पास इससे ज़्यादा भी हैं।

ध्यान दें कि कहावतों की श्रेणी में कई उप-किस्में हैं। चमत्कार की कहानियाँ। फॉर्म आलोचकों को चमत्कार की कहानियों के लिए निम्नलिखित संरचना मिलती है।

समस्या का वर्णन किया गया है। किसी व्यक्ति की बीमारी या खतरा या आवश्यकता। कुछ इस तरह का।

खतरा है, नाव डूबने वाली है। आवश्यकता है, ये लोग यहाँ जंगल में हैं, और हो सकता है कि जब उनका रक्त शर्करा स्तर बहुत कम हो जाए या कुछ और हो जाए, तो वे वापस शहर भी न पहुँच पाएँ, ऐसा हम कह सकते हैं। समस्या का समाधान चिकित्सक या किसी और की हरकतों से होता है।

और बुल्टमैन ने टिप्पणी की है कि एक उपचारक के रूप में यीशु के कार्य जोसेफस या रब्बीनिक सामग्रियों या जादुई पपीरी या अपोकलिफ़ल गॉस्पेल या उस तरह की चीज़ों में उपचारकों के कुछ कार्यों की तुलना में बहुत संयमित हैं। और फिर चमत्कार के प्रभाव को बताया गया है। व्यक्ति ठीक हो गया, उसकी प्रतिक्रिया, उसकी प्रतिक्रिया।

प्रतिक्रिया भीड़ है, प्रतिक्रिया शैतान है, इस तरह की चीजें। हम आपको थोड़ा सा एहसास दिलाने के लिए यहाँ कुछ उदाहरण देते हैं। मरकुस 1:23 से 27, आराधनालय में शैतान से ग्रस्त व्यक्ति।

कहानी की शुरुआत में कुछ संदर्भगत संबंध होते हैं। तभी, वगैरह-वगैरह, और आलोचक कहते हैं, ठीक है, यह संपादक का काम है। ठीक है, वह इस किस्से को कथा में इस तरह जोड़ता है कि आप उसे बाहर निकाल दें।

लेकिन समस्या तो आपके सामने है। उस आदमी पर भूत सवार है। आपके सामने समाधान है।

यीशु बोलते हैं और उस व्यक्ति को ठीक करते हैं। और जैसा कि मैंने कहा, बुल्टमैन ने नोट किया कि अपोक्रीफा और ग्रीक चमत्कार की कहानियों की तुलना में, यीशु के उपचार में बहुत सरलता है। कोई जादुई शब्द या अनुष्ठान नहीं, हालांकि कभी-कभी वे इफेथा को किसी प्रकार के जादुई शब्द के रूप में इंगित करते हैं, हालांकि यह मूल रूप से खुला के लिए अरामी है, ठीक है? और निश्चित रूप से, कुछ भूत भगाने वाले जो आप अन्यत्र देखते हैं, मुझे लगता है कि जोसेफस में, जहां जोसेफस हमें बताता है, मुझे लगता है कि यह एक एसेन था जिसके पास कुछ जड़ी-बूटियाँ थीं जो सोलोमन की जादुई पुस्तकों में से एक में निर्दिष्ट थीं।

वह अंगूठी लेता है, उसे उस व्यक्ति की नाक के पास रखता है, उसे खींचता है, और राक्षस बाहर आ जाता है। और राक्षस यहाँ पर पानी से भरा एक वाशबेसिन पलट देता है ताकि आपको पता चले कि वह बाहर आ गया है, आदि। तो, ठीक है, इस विशेष मामले में जो प्रभाव हम देख रहे हैं वह यह है कि राक्षस से ग्रस्त व्यक्ति, यीशु बोलता है और उस व्यक्ति को ठीक करता है, और फिर आपको इस विशेष मामले में भीड़, राक्षस और ठीक हुए व्यक्ति की प्रतिक्रिया मिलती है।

या मार्क 4:35 से 41, यीशु हवा और लहरों को डांटते हैं। संदर्भ: उस दिन, इसे बाहर फेंक दो, ठीक है? समस्या यह है कि नाव डूब रही है और तेज़ हवाएँ चल रही हैं। समाधान, यीशु हवा को डांटते हैं।

बल्कि, संयमित कार्य। प्रभाव, शांति। शिष्य चकित हैं।

ये दोनों उदाहरण बुल्टमैन की आदिम चमत्कार कहानी के स्वरूप में फिट बैठते हैं। एक दृश्य, कुछ अभिनेता, एक इकाई के रूप में अभिनय करने वाली भीड़, आदि। खैर, चमत्कार कहानियों का वास्तव में यही मूल स्वरूप होता है।

हम इसे पहले ही देख चुके हैं, और जब हमने अपने एक्सेजेटिव चमत्कार खाते में चमत्कार खातों के बारे में बात की और जब हमने सिनॉप्टिक गॉस्पेल में कई अलग-अलग प्रकार के आख्यानों के लेलैंड राइकेन के चरित्र चित्रण को देखा। उनका एक बुनियादी रूप है, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप उन्हें आदिम या विकसित कह सकते हैं। यह इस तरह की किसी चीज़ को बयान करने का एक स्वाभाविक तरीका है और अगर आप चाहें तो इसे किसी भी समस्या-समाधान उपाख्यान पर लागू किया जा सकता है।

कहावतें। कहावतें एक ऐसी कहानी है जिसमें एक कहावत मुख्य विशेषता होती है। कहावत के अर्थ या प्रभाव को स्पष्ट करने के लिए कहानी का निर्माण किया जाता है।

नए नियम की कहानियों की कुछ सामान्य विशेषताएँ। इनमें से कुछ, उचित रूप से संशोधित, धर्मनिरपेक्ष और आधुनिक रूपों पर भी लागू होंगी। सबसे पहले, यीशु के कथन या उनके द्वारा स्वीकृत किसी कथन पर जोर दिया जाता है।

रब्बी साहित्य में, हिलेल द्वारा कही गई किसी बात, शम्माई द्वारा कही गई किसी बात, अकीवा द्वारा कही गई किसी बात या ऐसी ही किसी बात पर जोर दिया जाता है। संक्षिप्त, सरल वर्णन ही कथन को समझने योग्य बनाने के लिए पर्याप्त है। अक्सर कोई व्यक्ति कोई कहानी सुनाता है और फिर कहता है, तुम्हें वहाँ होना था, ठीक है? दूसरे शब्दों में, उसने कहानी बहुत अच्छी तरह से नहीं सुनाई, मूल रूप से इसका यही अर्थ है।

अगर आप इसे अच्छी तरह से बताते हैं, तो व्यक्ति बात को समझ सकता है। तीसरा, कहानी में कुछ जीवनी संबंधी रुचि है। लेकिन बुल्टमैन कहते हैं, यह केवल जीवनी संबंधी रुचि है कि लोगों ने यीशु के बारे में क्या सोचा था।

बुल्टमैन का दावा है कि इनका कोई वास्तविक ऐतिहासिक महत्व नहीं है, क्योंकि ये सटीक नहीं हैं। जैसा कि हमने पहले देखा, बुल्टमैन के बाद के लोग इससे असहमत हैं, उनका कहना है कि अगर कई प्रमाण और असंगति और इस तरह की बातें हैं, तो जीवनी संबंधी विशेषताएँ ऐतिहासिक यीशु तक वापस जा सकती हैं और उनका कुछ महत्व हो सकता है। और अंत में, कहानी को यीशु के कथन या कार्य द्वारा समाप्त किया जाता है।

कभी-कभी कहावत बीच में आ जाती है, और कार्य, जैसे कि यीशु ने उस व्यक्ति को ठीक किया या कुछ और, अंत में होता है, लेकिन अधिक बार कहावत के द्वारा इसे समाप्त कर दिया जाता है। यह कहानी में अच्छी तरह से प्रवेश करने और बाहर निकलने का काम करता है। यह आमतौर पर कहावत के साथ या यीशु के किसी कार्य के साथ समाप्त होता है।

जब आप ऐसे लोगों की बात सुनते हैं जो कुशल या अनुभवी कहानीकार नहीं हैं, तो आप एक बात नोटिस करते हैं कि उन्हें कहानी को रोकने में कठिनाई होती है। वे नहीं जानते कि वे जो कहानी सुना रहे हैं, उसे संतोषजनक तरीके से कैसे कहें। तो चलिए, कहानियों को कहने के कुछ उदाहरण देखते हैं।

मार्क 3, श्लोक 2-6, सूखे हाथ वाला आदमी ठीक हो गया। यह आदिम नहीं है, क्योंकि हम यहाँ चमत्कार और कहावत की कहानी का संयोजन देखते हैं, लेकिन चूँकि कहावत पर जोर दिया गया है, इसलिए चमत्कार वह दृश्य है जो कहावत को प्रकाशित करता है। इसे शायद कुछ सरलीकरण की आवश्यकता है, ताकि यह रूप आलोचना के अनुसार आदिम रूप हो।

संदर्भ: फरीसी यीशु को देख रहे हैं। सवाल यह है कि, उसके पास सूखे हाथ वाला यह आदमी है। क्या यीशु चंगा करेगा? जवाब में, यीशु कहते हैं, क्या सब्त के दिन चंगा करना वैध है? और यीशु

के चंगा करने के चमत्कार ने इस सवाल का जवाब दिया। जीवनी संबंधी रुचि, यीशु का गुस्सा, बीमार आदमी के लिए यीशु की चिंता।

गोल करना, या तो खुद को ठीक करना या जब फरीसी चले जाते हैं, बल्कि क्रोधित होते हैं। कहानी कहने का एक और उदाहरण, मार्क 2, श्लोक 23-28, सब्त के दिन अनाज चुनना। यहाँ, यीशु उनके सवाल का जवाब एक सवाल से देते हैं।

वह यह कहकर कहानी को समाप्त करता है कि सब्त मनुष्य के लिए बनाया गया था, न कि मनुष्य सब्त के लिए। जीवनी संबंधी रुचि, अपने शिष्यों के प्रति यीशु की करुणा, आदि। हमारे पास ऐसे कई मामले हैं जहाँ यीशु ने दृष्टांत के साथ जवाब दिया।

प्रश्न: मेरा पड़ोसी कौन है? उत्तर, दयालु सामरी का दृष्टांत, आदि। इनमें से पहली श्रेणी को यहूदी कहावतें कहा जाता है। ये रब्बी साहित्य में मौजूद कहानियों के समान हैं।

कोई व्यक्ति, शत्रु, राजा, शिष्य या भीड़ में से कोई व्यक्ति, यीशु से प्रश्न पूछता है। और, रब्बी से भी प्रश्न पूछता है, क्षमा करें। और रब्बी का विशिष्ट उत्तर एक दृष्टान्त या कोई अन्य प्रश्न होता है।

स्वाभाविक रूप से, यह प्रकार पुराना होगा, लेकिन जरूरी नहीं कि यह यीशु से ही हो। हमने आपको जो दो उदाहरण दिए हैं, सूखे हाथ वाला आदमी और सब्त के दिन अनाज चुनना, वे इसी श्रेणी में आते हैं। लेकिन, बुल्टमैन यूनानी कहावतों की कहानियाँ भी देखता है।

और यह बहुत कम निश्चित रूप है। इस रूप को मूल रूप से एक स्टीरियोटाइप सूत्र द्वारा पेश किया जाता है। जब वह, ग्रीक दार्शनिक या शिक्षक या कुछ और, किसी ने किसी चीज़ के बारे में पूछा, तो उसने कहा।

इसके पीछे कोई वास्तविक कहानी या पृष्ठभूमि नहीं है। विभिन्न यूनानी दार्शनिकों के किस्सों को आमतौर पर इसी तरह संरक्षित किया जाता था। खैर, इसका एक क्लासिक न्यू टेस्टामेंट उदाहरण है।

यह लूका 17:20-21 में है, जिसमें ऊपर दिए गए सूत्र का उपयोग किया गया है। NASU में। अब, फरीसियों द्वारा यह पूछे जाने के बाद कि परमेश्वर का राज्य कब आएगा।

उस ने उनको उत्तर दिया, कि परमेश्वर का राज्य चिन्हों के साथ नहीं आता। और न लोग कहेंगे, कि देखो, वह यहाँ है, या वहाँ है।

क्योंकि देखो, परमेश्वर का राज्य तुम्हारे बीच में है। जैसा कि ग्रीक कहावत है, कहानियाँ स्पष्ट रूप से बाद के संस्करण हैं जो ग्रीक प्रभाव दिखाती हैं। बुल्टमैन उन्हें बाहर निकाल देता है।

बुल्टमैन के अनुसार, यहूदी कहानियों का स्रोत यीशु, आरंभिक यहूदी चर्च या ईसाई धर्म से पहले के यहूदी हो सकते हैं। लेकिन, यूनानी कहावतों की कहानियों का स्रोत गैर-यहूदी चर्च है। तो, यह दूसरी श्रेणी है।

पहला, चमत्कार की कहानियाँ। दूसरा, कहावतें। तीसरा, कहावतें, या हम कह सकते हैं, अलग-अलग कहावतें।

कहावतें जिनके साथ मूल रूप से कोई कहानी नहीं थी, जैसा कि कहावतों की कहानियों में था। इनमें से कुछ को अब उपदेश बनाने के लिए एक साथ समूहीकृत किया जा सकता है। अन्य अब कहावतों की कहानी का हिस्सा हो सकते हैं।

लेकिन, मूल रूप अलग-थलग था। उनमें से कुछ अभी भी यहाँ अलग-थलग हैं। हम कैसे जान सकते हैं कि कोई उपदेश या कहानी संपादक की खोज है? एक मामले में कहानी क्यों हटाई जाए और दूसरे में नहीं? आलोचना कहती है कि अगर कहानी के बिना कहावत का कोई मतलब नहीं है, तो यह एक कहावत कहानी है, कोई साधारण कहावत नहीं।

लेकिन, अगर इसके बिना भी इसका कोई मतलब निकलता है, तो हो सकता है कि यह मूल रूप से एक साधारण कहावत रही हो। बुल्टमैन को सुसमाचार में पाँच तरह की कहावतें मिलती हैं। कहावतें, जिन्हें बुल्टमैन लोगिया कहते हैं।

लेकिन, जिस शब्द पर आलोचकों ने ज़ोर दिया है और जो आम लोगों के लिए ज़्यादा समझ में आता है, वह है नीतिवचन। ये नीतिवचन की पुरानी नियम की किताबों में मौजूद नीतिवचनों की तरह हैं। या, कुछ हद तक पुअर रिचर्ड्स अल्मनैक में बेंजामिन फ्रैंकलिन की नीतिवचनों की तरह।

किसी तरह की छोटी, सारगर्भित कहावत। पहला अंतिम होगा, और अंतिम पहला होगा। या, चिकित्सक, खुद को ठीक करो।

दूसरी श्रेणी भविष्यसूचक या सर्वनाश संबंधी कथनों की है। ये भविष्य के बारे में कथन हैं, खास तौर पर युग के अंत के बारे में। एक भी पत्थर दूसरे पर नहीं छोड़ा जाएगा।

दो लोग चक्की पीस रहे होंगे; एक ले लिया जाएगा, और एक छोड़ दिया जाएगा, आदि। तीसरी श्रेणी है कानून के शब्द या आज्ञाएँ। आज्ञाओं या आज्ञाओं के रूप में संरचित कथन।

दूसरा गाल आगे करो और एक कदम और आगे बढ़ो। चौथी श्रेणी में 'मैं' शब्द है, जहाँ यीशु ने 'मैं' शब्द का प्रयोग किया है। वह खुद को संदर्भित कर रहा है।

ये यीशु के व्यक्तित्व और अधिकार पर ध्यान केंद्रित करते हैं। आपने उन्हें कहते हुए सुना होगा, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, आदि। ये पहाड़ी उपदेश से उदाहरण होंगे।

और अंत में, दृष्टांत। रूपकात्मक कथन, अक्सर कहानी के रूप में, कथा में निहित अर्थ के बिना। बाल्डविन यहाँ एडॉल्फ यूलिचर से बहुत प्रभावित थे, जिन्होंने दावा किया कि प्रामाणिक दृष्टांत केवल एक ही तुलना करते हैं, केवल एक बिंदु रखते हैं, और कभी भी रूपक नहीं होते हैं।

वे कहते हैं कि बीज बोने वाले का दृष्टांत प्रामाणिक हो सकता है, लेकिन व्याख्या इसलिए नहीं है क्योंकि हर वस्तु का एक निर्दिष्ट अर्थ होता है; यानी, यह दृष्टांत को रूपक में बदल देता है। यह एक आदिम रूप होने के लिए बहुत जटिल है। शादी की दावत का दृष्टांत, जिसे हमने पहले देखा था, आपको याद होगा कि मेहमानों को आमंत्रित किया जाता है, और उनमें से कुछ इसे अस्वीकार कर देते हैं, और वे बाहर जाते हैं और कुछ और लेते हैं, और फिर जब वे वहाँ पहुँचते हैं, तो एक आदमी दिखाई देता है जिसने शादी का वस्त्र नहीं पहना होता है, आदि।

विवाह भोज के दृष्टांत के दो भाग हैं। विवाह निमंत्रण भाग और विवाह परिधान भाग। मूल रूप से ये दो दृष्टांत थे जिन्हें संपादक मैथ्यू 22 ने संयुक्त किया था।

राजा की शादी की दावत, मैथ्यू 22, लूका 14 के पहले के अमीर आदमी के भोज का संशोधित संस्करण है। युद्ध, बेटा और राजा को बाद में जोड़ा गया था। यीशु के प्रामाणिक दृष्टांत यीशु की सेवकाई या राज्य के आने से संबंधित हैं, इसलिए बुल्टमैन किसी भी अन्य विषय पर आधारित अन्य दृष्टांतों को बाहर कर देंगे।

खैर, यह एक तरह से एक त्वरित दौरा है कि कैसे बुल्टमैन सभी अलग-अलग कथनों आदि को एक-एक करके जाने बिना फॉर्म आलोचना करता है। बुल्टमैन के अनुसार, मसीह के जीवन के लिए परिणाम। विभिन्न फॉर्म आलोचकों द्वारा परिणाम काफी भिन्न होंगे, यह इस बात पर निर्भर करता है कि फॉर्म आलोचक उदार-रूढ़िवादी स्पेक्ट्रम पर कहां आता है, लेकिन बुल्टमैन चरम उदारवादी छोर के करीब है।

चमत्कार की कहानियाँ। उन्हें उनके मूल रूप में कम करने के बाद भी, बुल्टमैन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि ये वास्तविक नहीं हैं। क्यों? क्योंकि उसका विश्वदृष्टिकोण चमत्कार होने की अनुमति नहीं देता है।

उनकी चर्चा और आस्था के प्रमाण, पृष्ठ 291 और उसके बाद देखें। यह एक बड़ी धारणा है। वह उन्हें गलत समझी गई प्राकृतिक घटनाओं के रूप में समझाने की कोशिश कर सकता था, लेकिन जाहिर तौर पर वह पॉलस की तरह उपहास का पात्र नहीं बनना चाहता था।

कहानियाँ कहना। बुल्टमैन के अनुसार, केवल दो ही वास्तविक हैं, अर्थात्, यीशु से जुड़ी कहानियाँ। बुल्टमैन ने असंगति तर्क का उपयोग करते हुए, उन सभी बातों को खारिज कर दिया जो यहूदी या ईसाई पृष्ठभूमि के लिए उपयुक्त हो सकती थीं।

क्या आपको याद है कि हमने मार्टिन लूथर के बारे में क्या कहा था? यह एक अजीब पद्धति है। अगर हम लूथर की हर उस बात को निकाल दें जो कैथोलिक धर्म या शुरुआती लूथरवाद से मेल खाती हो, तो हमारे पास शायद ही कुछ बचेगा।

शायद उसकी इच्छाशक्ति का बंधन, लेकिन ऑगस्टिनियनवाद में भी इसका पूर्वग्रह है। जब तक किसी व्यक्ति के कोई अनुयायी न हों, हम उसकी शिक्षा और उसके अनुयायियों की शिक्षाओं के बीच समानताएँ खोजने की उम्मीद करेंगे। और जब तक वह बहुत अजीब न हो, हम उसकी शिक्षा और उसकी संस्कृति के बीच समानताएँ खोजने की उम्मीद करेंगे।

बुल्टमैन ने जिन दो कहानियों को स्वीकार किया है, वे हैं मार्क 12:13-17, श्रद्धांजलि राशि, और प्रामाणिकता के लिए उनका तर्क यह है कि न तो यहूदी और न ही सताए गए ईसाई कर देना पसंद करते हैं। खंडन। हो सकता है कि कहानी का स्रोत हेरोदियन या ज़ीलॉट्स था, यह इस बात पर निर्भर करता है कि यीशु को गंभीरता से या विडंबना से बोलते हुए देखा जाता है या नहीं।

मार्क 14, 3-9, बेथानी में अभिषेक। प्रामाणिकता के लिए तर्क, इत्र को उंडेलने की अनुमति देना, ईसाइयों और यहूदियों दोनों में गरीबों की मदद करने में रुचि को देखते हुए अजीब है। गरीबों के पास हमेशा आपका विचार था, जिसे भी अजीब माना जाता था।

इसलिए पैसे की बर्बादी पर डांटना-फटकारना अनोखी बात है, और इसलिए बुल्टमैन ने सोचा कि यह प्रामाणिक है। अब हम अलग-अलग कहावतों की ओर बढ़ते हैं। बुल्टमैन इनमें से केवल 40 को ही वास्तविक मानते हैं।

उन्होंने कहा कि नीतिवचन वास्तविक नहीं हैं। शुरुआती ईसाइयों को ईसा मसीह के जीवन में 70 या 80 ई. तक कोई दिलचस्पी नहीं थी। फिर उन्होंने यीशु की शिक्षाओं को गढ़ने के लिए पहले से मौजूद यहूदी कहावतों को अपनाया।

उसे कुछ कहने की ज़रूरत है। दो सर्वनाशकारी बातें। कुछ यीशु की हैं।

अन्य ईसाईकृत यहूदी सर्वनाशकारी कथन या ईसाई भविष्यवक्ताओं द्वारा कहे गए कथन हैं जिन्हें बाद में यीशु के नाम से जाना गया। बुल्टमैन और कई अन्य आलोचक प्रारंभिक ईसाई धर्म को आधुनिक पेंटेकोस्टल आंदोलन की तरह मानते हैं, जो उनके विचार में प्रशंसा नहीं है। मूल रूप से, सभाओं में खड़े होकर विभिन्न भविष्यवक्ताओं द्वारा दिए गए भविष्यसूचक संदेशों को बाद में गलत तरीके से यीशु के नाम से जाना गया।

मूलतः, बुल्टमैन जो दावा करता है। कानून के शब्द। इनमें से कुछ यीशु के हैं।

बाह्यवादी धर्म के विरुद्ध आदेश ही प्रामाणिक होने की संभावना है क्योंकि वे विधिवाद के विरुद्ध हैं। आँख के शब्द।

बुल्टमैन के अनुसार, इनमें से कोई भी यीशु की ओर से नहीं है। ये उनके मसीहाई मंत्रालय और उनके ईश्वरत्व की बात करते हैं। इसलिए, बुल्टमैन उन्हें अस्वीकार करते हैं।

उनका मानना है कि मसीहा का विचार, आरंभिक चर्च द्वारा गढ़ा गया था, जैसा कि ब्रेडा ने अपने मसीहाई गुप्त सिद्धांत में किया था। दृष्टांत। कुछ तो वास्तविक हैं।

हालाँकि, उनके संदर्भ और व्याख्याएँ चर्च द्वारा बाद में की गईं खोज हैं। सभी पूर्वानुमानित विशेषताएँ स्पष्ट रूप से बाद में जोड़ी गई हैं। खैर, इसके लिए परिणाम, फिर।

यीशु के व्यक्तित्व और जीवन के बारे में जानकारी बहुत कम है। बुल्टमैन का मानना है कि यीशु ने जीवन जिया, कष्ट झेले और मरे, जो कि, वैसे, आपके कुछ कम्युनिस्ट तर्कों से कहीं ज़्यादा है। बुल्टमैन का मानना है कि कुछ लोगों ने यीशु का अनुसरण किया, लेकिन अगर उन्हें लगा कि वह मसीहा है तो उन्होंने उसे गलत समझा, और अगर उन्हें लगा कि वह उद्धारकर्ता या ईश्वर है तो उन्होंने उसे गलत समझा।

आगे के परिणाम। यीशु की शिक्षाओं के बारे में जानकारी कुछ हद तक स्पष्ट है। बुल्टमैन का मानना है कि यीशु की 40 सच्ची बातों से हम कुछ विचार निकाल सकते हैं।

वे कहते हैं, सबसे पहले, यीशु ने खुद को एक भविष्यवक्ता के रूप में सोचा, जिसे अंतिम समय में लोगों को चेतावनी देने के लिए भेजा गया था कि राज्य आ रहा है और उन्हें पश्चाताप करने और पवित्रता के जीवन जीने के लिए बुला रहा है। ये सभी बिंदु सत्य हैं, लेकिन बुल्टमैन ने यीशु के दावों और शिक्षाओं को काफी हद तक कम कर दिया है। दूसरे, बुल्टमैन को लगता है कि यीशु आने वाले राज्य को वास्तविक और आसन्न के रूप में चित्रित करते हैं, लेकिन वह गलत था।

यह वास्तव में एक बहुत ही सामान्य उदारवादी दृष्टिकोण है कि यीशु और प्रेरितों को उम्मीद थी कि उनके जीवनकाल में राज्य आएगा। बुल्टमैन और अन्य लोग घटनाओं से खुद को उचित मानते हैं, क्योंकि राज्य नहीं आया और नहीं आया है, हालांकि 2 पतरस 3.3 के साथ इसकी तुलना करना कुछ दिलचस्प है, जहां पतरस कहता है, सबसे पहले यह जान लो कि अंतिम दिनों में, ठट्ठा करने वाले अपनी ठट्ठा करते हुए आएंगे, अपनी वासनाओं के पीछे भागेंगे और कहेंगे, उसके आने का वादा कहां गया? क्योंकि जब से पिता सो गए हैं, तब से सब कुछ वैसा ही चल रहा है जैसा सृष्टि के आरंभ से है। बुल्टमैन यीशु की शिक्षा का वास्तविक मूल्य इस तथ्य में देखते हैं कि हममें से प्रत्येक को हमेशा हर पल ईश्वर या दुनिया के लिए जीने के अस्तित्वगत विकल्प का सामना करना पड़ता है।

बुल्टमैन हमारे रोज़मर्रा के जीवन में यीशु की शिक्षा का एकमात्र मूल्य यह देखते हैं कि कोई परलोक नहीं है और कोई भविष्य का न्याय नहीं है। यह रोज़मर्रा का मूल्य यीशु की शिक्षा में वास्तविक और मौजूद है, लेकिन यह उनकी शिक्षा का केवल एक छोटा सा हिस्सा है। ठीक है, यह रूप आलोचना का एक बहुत ही त्वरित दौरा है और इसे बड़े पैमाने पर बुल्टमैन के संदर्भ में देखा जाता है, लेकिन उनमें से सबसे प्रभावशाली कौन है? अब हम वापस आते हैं और रूप आलोचना के मूल्यांकन के संदर्भ में सोचते हैं।

हमें फॉर्म आलोचना के बारे में क्या सोचना चाहिए? मैं सबसे पहले उन दावों के संदर्भ में मूल्यांकन शुरू करूँगा जो पहले किए गए थे, फॉर्म आलोचना के दावे। तो, इनमें से पहला, लिखित सुसमाचार से पहले मौखिक परंपरा का दौर था। यह लगभग दो पीढ़ियों तक फैला था, और पहले सुसमाचार 70 से 100 ईस्वी के बीच लिखे गए थे।

वैसे, एक मौखिक अवधि थी क्योंकि सुसमाचार स्वयं तुरंत नहीं लिखे गए थे, लेकिन यह शायद 40 या 50 ईस्वी तक केवल 20 साल तक चला, न कि 40 से 70 साल जैसा कि उदारवादी दावा करते हैं। केवल 20 वर्षों के बाद, अभी भी कई प्रत्यक्षदर्शी जीवित थे क्योंकि शुरुआती घटनाओं

को हजारों लोगों ने देखा था। इस प्रकार, लगभग 70 ईस्वी से पहले, सत्यापन के लिए कई लोग मौजूद थे।

यरूशलेम के पतन के बाद, अधिकांश यहूदी ईसाई बिखर गए, और कई अन्य प्रत्यक्षदर्शी मर गए। पौलुस ने घटनाओं के 20 साल बाद ही लिखा, और उसकी कोई भी चिट्ठी यीशु की सेवकाई के 35 साल से ज़्यादा बाद की नहीं थी। प्रेरितों और यरूशलेम चर्च के साथ उसका घनिष्ठ संपर्क था।

प्रारंभिक और व्यापक परंपरा कहती है कि दो सुसमाचार प्रेरितों द्वारा लिखे गए थे और दो अन्य उनके तत्काल सहयोगियों द्वारा। परिणामस्वरूप, परंपरा की कोई वास्तविक श्रृंखला नहीं है जो आलोचना के लिए आवश्यक है। उनकी योजना में, आप जानते हैं, घटना यहाँ है, और पर्यवेक्षक ए कुछ चीजें देखता है, और वह बी को बताता है, और वह सी को बताता है, और सी डी को बताता है, आदि, जब तक आप यहाँ ज़ेड या कुछ और तक नहीं पहुँच जाते, और फिर इसे लिखा जाता है। परंपरा की एक लंबी श्रृंखला। इसके बजाय, सुसमाचारों में सभी जानकारी कई गवाहों, कई गवाही और जाँच के लिए बहुत सारे अवसरों के साथ पहली या दूसरी थी।

रूप आलोचना का दूसरा दावा यह है कि शुरुआती कहावतें और कहानियाँ स्वतंत्र इकाइयों के रूप में प्रसारित हुईं। खैर, हम वास्तव में देखते हैं कि सुसमाचार की संरचना अक्सर एक धागे पर मोतियों की तरह होती है। हमेशा नहीं, लेकिन अक्सर।

विस्तृत घटनाएँ संक्षिप्त संयोजकों द्वारा एक साथ जुड़ी हुई हैं। हमने उनमें से कुछ को तब देखा जब हमने वहाँ कुछ चमत्कारों के वृत्तांतों को देखा और उसी समय और ऐसी ही अन्य चीजें जो बहुत संक्षिप्त संयोजक हैं। रूप आलोचना कहती है कि आरंभिक चर्च ने अधिकांश मोतियों और उन्हें एक साथ रखने के लिए लगभग सभी धागे बनाए।

खैर, कुछ सुसमाचारों का उपयोग संभवतः स्वतंत्र इकाइयों के रूप में किया गया था, इस अर्थ में कि प्रेरितों ने यीशु ने जो कहा, जो किया और जो वह था, आदि सिखाते हुए यात्रा की। और वे स्वाभाविक रूप से अपने उपदेशों में बिंदुओं को स्पष्ट करने और तथ्यों को सिखाने के लिए व्यक्तिगत घटनाओं का उपयोग करते थे। लेकिन इन घटनाओं का घटना से लिखित सुसमाचार में उनके संचरण में कभी भी स्वतंत्र, पृथक संचलन नहीं था।

उनके पास कुछ स्वतंत्र, पृथक संचलन हो सकता है जिसमें यह शामिल नहीं था, लेकिन क्योंकि सुसमाचार लेखक प्रेरित या तत्काल श्रोता थे, उनके पास उस लिंक में यह स्वतंत्र, पृथक संचलन कभी नहीं था, यदि आप चाहें तो। प्रेरितों को धागे के साथ-साथ मोतियों का भी पता था, और सत्तर जैसे अन्य शिक्षक जानते थे कि घटनाएँ एक साथ कैसे होती हैं, और यह जोड़ने वाली जानकारी कभी नहीं खोई गई। यदि पारंपरिक लेखकत्व की जानकारी बिल्कुल सही है, तो स्वतंत्र संचलन का विहित सुसमाचारों की सामग्री से कोई संबंध नहीं है।

इसके अलावा, सभी सुसमाचार सामग्री एक धागे पर मोतियों की तरह नहीं दिखती। जुनून की कहानी इतनी बारीकी से जुड़ी हुई है कि इसे स्वतंत्र उपाख्यान नहीं कहा जा सकता। अन्य कहानियाँ हमेशा एक दूसरे से बहुत करीब से जुड़ी हुई हैं।

याईर की बेटी में रक्तस्राव वाली महिला हमेशा आपस में जुड़ी हुई है, यहाँ तक कि उन वृत्तांतों में भी जहाँ ऐसा होता है। मार्क ने मार्क 1:21-39 में सब्त के दिन के अनुक्रम को बहुत ही बारीकी से जोड़ा है। कुछ कथन बहुत ही बारीकी से जुड़े हुए हैं, जैसे कि मार्क 4:21-25 और मार्क 8:34-91 में।

हम ऐसी जगहें देखते हैं जहाँ इकाइयों को एक साथ रखने वाला एकमात्र लेखक एक नैतिक और काव्यात्मक प्रतिभा था। उदाहरण के लिए, माउंट पर उपदेश में अद्भुत हिब्रू समानता और काव्यात्मक सामग्री है। इसकी नैतिक शिक्षा अब तक देखी गई सबसे अच्छी है।

केनेथ बेली द्वारा उनके पोएट एंड पीजेंट में देखे गए चियास्म और न्यू टेस्टामेंट इन लिटरेरी क्रिटिसिज्म के लेलैंड राइकेन में यीशु के दृष्टांतों और उपदेशों की साहित्यिक गुणवत्ता पर विभिन्न टिप्पणियाँ भी देखें। विभिन्न प्रारंभिक समूहों द्वारा बनाए गए ये सभी अंश इस नैतिक और साहित्यिक ताने-बाने में कैसे बुने गए? यह किस प्रतिभा ने किया? यीशु सबसे अच्छा सुझाव है। लेकिन उस मामले में, इन इकाइयों का केवल एक ही स्रोत था और वे कभी स्वतंत्र नहीं थीं।

तीसरा, सुसमाचार सामग्री को रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। किसी अर्थ में, किसी भी लिखित या मौखिक संचार को रूपों में वर्गीकृत किया जा सकता है। इसके अलावा, सुसमाचार की मोतियों की संरचना अपेक्षाकृत छोटे, असतत रूपों, यानी विभिन्न प्रकार की कहानियों और कथनों के कई उदाहरणों की अनुमति देती है।

फिर भी बुल्टमैन की कुछ श्रेणियों का औपचारिक चरित्र संदिग्ध है। बुल्टमैन की पाँच कहावत श्रेणियों में से चार, दृष्टांतों को छोड़कर, केवल विषय-वस्तु का वर्णन करती हैं। कौन सी शैली कानून शब्द या आई शब्द को कहावत से अलग करती है? इसके अलावा, जुनून कथा का कोई रूप नहीं है जिसमें यह फिट बैठता है।

आप इतनी जटिल चीज़ को आदिम रूप में कैसे बदल सकते हैं? निराकार पदार्थों की तिथि निर्धारण रूपों के विकास पर आधारित नहीं हो सकता। बुल्टमैन ने पहले से ही, सच्चे रूपों से स्वतंत्र होकर, तय कर लिया है कि कौन सी सामग्री प्रामाणिक है और किस पर वह विश्वास नहीं कर सकता। हम देखते हैं कि वह सभी चमत्कारी रूपों को फेंक देता है, भले ही उनमें उसका असली आदिम रूप हो।

चौथा, प्रारंभिक चर्च ने अपनी व्यावहारिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कहानियों और कहावतों का आविष्कार और विस्तार किया। निश्चित रूप से, यीशु के बारे में सामग्री के संरक्षण में एक कारक प्रारंभिक चर्च के लिए इसका मूल्य था। लेकिन यह एकमात्र कारक नहीं था, और किसी आविष्कार का प्रस्ताव करने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

वैसे भी व्यावहारिक से हमारा क्या मतलब है? ध्यान दें कि पॉल के पत्र कार्यशील चर्चों की ज़रूरतों को पूरा करने में सुसमाचार की तुलना में कहीं ज़्यादा व्यावहारिक हैं, क्योंकि वे वास्तविक समस्याओं से जूझ रहे वास्तविक चर्चों को लिखे गए हैं। यह आज व्यावहारिक रूप से उन्मुख चर्चों में पत्रों से उपदेश देने की बड़ी प्रबलता में बहुत स्पष्ट है। फिर भी, पॉल की शिक्षाओं

की तुलना में, ऐसा प्रतीत होता है कि चर्च के कई हित सुसमाचार में नहीं पाए जाते हैं, और इसके विपरीत।

सुसमाचार हमें बताते हैं कि यीशु कौन है और उसने क्या किया, उद्धार का इतिहास और बाइबिल धर्मशास्त्र, लेकिन वे कई व्यावहारिक मुद्दों का जवाब नहीं देते हैं। यहां तक कि यीशु के प्रायश्चित के व्यावहारिक अनुप्रयोगों का विवरण भी सुसमाचारों के बजाय पत्रों में पाया जाता है, जाहिर है क्योंकि यीशु ने अपने सांसारिक मंत्रालय के दौरान इस पर चर्चा नहीं की थी। यह कि लोग यीशु का अनुसरण करने के लिए तैयार थे, यहाँ तक कि अपनी मृत्यु तक उसका अनुसरण करते रहे, यह दर्शाता है कि उसने कुछ उल्लेखनीय किया होगा या कहा होगा।

सुसमाचारों में बहुत सी सामग्री बाद के चर्चों के लिए सीधे व्यावहारिक नहीं है, लेकिन ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है, खासकर फरीसियों और ऐसे लोगों के साथ उनके व्यवहार में। सुसमाचारों का संबंध यीशु की सेवकाई, उनके कथनों और उनके कार्यों को संरक्षित करने से है, यही कारण है कि चर्च उन्हें संरक्षित करता है। क्या सुसमाचार काल्पनिक हैं? सुसमाचारों में कई व्यावहारिक चीजें असंभव हैं।

पहाड़ी उपदेश में बहुत कुछ ऐसा है जो लोग अपनी क्षमताओं से नहीं कर सकते। विधिवादी चर्च सावधान रहते हैं कि वे ऐसे आदेशों का आविष्कार न करें जिनका पालन केवल अनुग्रह से ही किया जा सकता है। जब उदारवादी कहते हैं कि सुसमाचार सामग्री का आविष्कार किया गया था, तो वे दावा करते हैं कि प्रारंभिक चर्च ने यीशु के बारे में जो सिखाया जा रहा था उसे नियंत्रित नहीं किया, लेकिन नया नियम सत्य, प्रशिक्षित बुजुर्गों और झूठी शिक्षा को अस्वीकार करने के बारे में चिंतित है।

उदारवादी इस सामग्री के अधिकांश भाग को खारिज करने का प्रयास करते हैं, उदाहरण के लिए पादरी पत्रों को, उनकी तिथि को पहली शताब्दी के अंत तक धकेल कर। लेकिन अगर चर्च के नेताओं का एक समूह था जो मसीह की मृत्यु से लेकर सुसमाचार लिखे जाने तक चर्च की शिक्षा और सामग्री को नियंत्रित करता था, तो उदारवादी मुश्किल में हैं। उस स्थिति में, सुसमाचार ऐतिहासिक रूप से विश्वसनीय हैं, उदार धर्मशास्त्र गलत है, और आने वाला निर्णय है।

पांचवां, सुसमाचारों में जीवनी, भौगोलिक और कालानुक्रमिक महत्व की बहुत कम जानकारी है। वैसे, सुसमाचारों में इन क्षेत्रों में बहुत सारा डेटा है। हम 2,000 साल बाद यह सब जाँच नहीं कर सकते।

हमारे पास समय की मशीनें नहीं हैं। निश्चित रूप से, यीशु को अपने और आने वाले न्याय के बारे में बड़े-बड़े दावे करते हुए चित्रित किया गया है, और ये निहितार्थ मनुष्यों को प्रभावित करना जारी रखते हैं।

इन दावों और सुसमाचारों के ऐतिहासिक महत्व को नकारने के लिए, किसी को यह दावा करना होगा कि प्रारंभिक चर्च को इतिहास के यीशु में कोई दिलचस्पी नहीं थी। यह हर जगह विरोधाभासी है। 1 कुरिन्थियों 15, घटना के लगभग 25 साल बाद, पॉल कहते हैं, यदि मसीह को नहीं उठाया गया है, तो आप अभी भी अपने पापों में हैं।

पॉल यह नहीं कहता कि मेरी बात पर यकीन करो, बल्कि वह उन कई गवाहों से अपील करता है जो अभी भी जीवित हैं। घटना के लगभग 25 साल बाद भी, कोई भी मसीह के जीवन के बारे में विवरण की जाँच कर सकता है। लूका 1, 1-4 स्पष्ट रूप से कहता है कि लेखक को वास्तव में जो हुआ उसमें दिलचस्पी थी।

उन्होंने प्रत्यक्षदर्शियों से साक्षात्कार किया और मामले की सावधानीपूर्वक जांच की। प्रेरितों के काम 1 :21-22 में, यहूदा के स्थान पर किसी और को चुनते समय, प्रेरितों ने किसी ऐसे व्यक्ति को चुना जो मसीह के बपतिस्मा से लेकर पुनरुत्थान तक उनके साथ रहा था। इस प्रकार, प्रेरित न केवल यीशु के पुनरुत्थान के बल्कि उसकी सेवकाई के भी गवाह थे।

यह यीशु के इतिहास में बहुत रुचि दिखाता है। आरंभिक चर्च भी चिंतित था कि इस सामग्री को सावधानीपूर्वक प्रसारित किया जाए। 2 थिस्सलुनीकियों 2:2, 2:5, 2:17, और 3:17 में दूसरे आगमन के बारे में पॉल के झूठे संदेशों और पत्रों के बारे में चिंता देखें।

पॉल कहते हैं कि वह अपनी प्रामाणिकता के प्रमाण के रूप में व्यक्तिगत रूप से अपने पत्रों पर हस्ताक्षर करते हैं। उनकी प्रामाणिकता का प्रमाण। 2 तीमुथियुस 2:2 कहता है कि जो कुछ तुमने बहुत से गवाहों के सामने सुना है, उसे विश्वासयोग्य लोगों को सौंप दो।

तो, तीमुथियुस के पास सिर्फ पौलुस के शब्दों से ज़्यादा कुछ था। वैसे, हम रब्बी साहित्य में भी ऐसा ही एक कथन देखते हैं। मिशनाह, एडियोट 5-7, जहाँ रब्बी अकाबियाह बेन महलील 90 ई. के आसपास अपनी मृत्युशैया पर हैं।

वह अपने बेटे से कहता है कि वह सिर्फ वही दोहराए जो उसने ज़्यादातर शिक्षकों से सुना है। सिर्फ एक से आने वाली परंपरा को नज़रअंदाज़ करें, चाहे वह उसका पिता ही क्यों न हो। अपनी स्थिति को बनाए रखने के लिए, फ़ोरम आलोचक सुसमाचार और प्रेरितों के बीच घनिष्ठ संबंध के बारे में पापियास की गवाही को अस्वीकार करते हैं, हालाँकि इसके खिलाफ़ कोई बाहरी सबूत नहीं है।

हमारे पास स्पष्ट रूप से पापियास की गवाही है कि प्रेरित मैथ्यू मैथ्यू के सुसमाचार के पीछे है, और पीटर, मार्क के माध्यम से, मार्क के सुसमाचार के लिए जिम्मेदार है। उदारवादी प्रेरित मैथ्यू को सबसे अच्छा क्यू का लेखक बनाते हैं, और कहते हैं कि अन्य सभी प्रारंभिक संदर्भ पापियास की गलत व्याख्या पर आधारित हैं। यह एक बड़ी धारणा है।

क्या इरेनियस को अपने डेटा स्रोत के रूप में केवल पापियास तक सीमित रखा जा सकता था, जबकि उसका प्राथमिक शिक्षक पॉलीकार्प था? ध्यान दें कि ग्रीस्टिक्स को अपनी शिक्षाओं के लिए अधिकार का दावा करने के लिए कथानक सिद्धांतों पर जाना पड़ा। वे इस बात से सहमत थे कि यीशु की सार्वजनिक शिक्षा वैसी ही थी जैसी कि विहित सुसमाचारों में थी, लेकिन उन्होंने दावा किया कि यह अधूरी थी और इसे यीशु के गुप्त शब्दों के साथ पूरक होना चाहिए। थॉमस के सुसमाचार और यहूदा के सुसमाचार के शुरुआती शब्दों की तुलना करें, जिनमें से दोनों गुप्त शिक्षाओं का संदर्भ देते हैं।

यह सब दिखाता है कि चर्च को इस बात में दिलचस्पी थी कि यीशु वास्तव में कौन था और उनके लिखित दस्तावेज़ अच्छे थे। मार्सियन ने सब कुछ अविश्वसनीय बताकर बाहर फेंकने के बजाय लूका को संशोधित भी किया। छठा, प्रत्येक परंपरा इकाई का मूल संस्करण पुनः प्राप्त किया जा सकता है, और परंपरा को नियंत्रित करने वाले कानूनों का उपयोग करके इसके इतिहास का पता लगाया जा सकता है।

भले ही हम यह मान लें कि बाल्टीमोर के परंपरा के नियम वैध हैं, हालाँकि वास्तव में उनमें गंभीर समस्याएँ हैं, लेकिन इससे यह साबित नहीं होता कि सुसमाचारों में मिथ्याकरण हुआ है। यह दावा कि परंपरा के प्रसारण के दौरान, विवरण बढ़ने लगते हैं, नाम जोड़े जाते हैं, और प्रवचन अप्रत्यक्ष से प्रत्यक्ष में बदल जाता है, मार्क के मैथ्यू और ल्यूक के स्रोत होने के साथ मेल नहीं खाता है, जहाँ मार्क के पास बहुत सारे प्रत्यक्ष प्रवचन हैं और अक्सर मैथ्यू और ल्यूक की तुलना में अधिक विवरण हैं। यह सच है कि ये प्रवृत्तियाँ अक्सर कहानियों और कथनों के प्रसारण की विशेषता होती हैं, जैसे कि एक उपदेश चित्रण को बाहर निकालना, लेकिन कुछ करने की प्रवृत्ति भी यह साबित नहीं करती है कि यह किसी विशेष मामले में किया गया था।

समस्या यह है कि जो घटना वास्तव में घटी थी, उसके लिए लोगों के पास वास्तविक नाम थे, वे वास्तव में सीधे संवाद के साथ बोलते थे, और घटनाएँ वास्तव में बहुत विस्तार से घटित हुई थीं। इसलिए, ये सभी चीजें मूल घटना में थीं। एक घटना के दो आख्यान दिए गए हैं जिनमें अलग-अलग स्तरों का विवरण है, एक कम, एक अधिक, आपको अनुमान लगाना होगा कि कौन सा पुराना है।

यहाँ मूल घटना सभी विवरणों के साथ है, और फिर यह वापस नीचे आती है, और फिर अंततः यह बहुत कम हो जाती है, और फिर लोग चीजों का आविष्कार करना शुरू कर देते हैं और क्या लंबा तीर यहाँ है और छोटा तीर घटना से दूर इसके पीछे है या क्या छोटा तीर यहाँ है और लंबा तीर यहाँ है? आप नहीं जानते। भले ही कोई सुसमाचार में कुछ मिथ्याकरण स्वीकार करता हो, क्या अंतिम निर्णय की शिक्षा को पूरी तरह से खारिज करने के लिए पर्याप्त है? उदारवादियों को यह कहना चाहिए कि ऐसा करने के लिए सुसमाचार पूरी तरह से अविश्वसनीय हैं। क्या यह एक पीढ़ी में एक समूह के भीतर हो सकता है जो स्पष्ट रूप से सत्य के बारे में चिंतित था? कोई भी परंपरा के नियमों के आधार पर चमत्कार की कहानियों को खारिज नहीं कर सकता।

यह मछली की कहानियों से यह निष्कर्ष निकालने जैसा होगा कि मछलियाँ मौजूद नहीं हैं। परंपरा के नियम केवल कहानियों को सरल बनाने की अनुमति देते हैं, लेकिन वे उन्हें पूरी तरह से खारिज नहीं करते हैं। बुल्टमैन और उदारवादी इस धारणा पर चमत्कारों को खारिज कर देते हैं कि वे घटित नहीं हो सकते।

खैर, कोई भी वैज्ञानिक, और इससे भी अधिक बुल्टमैन, यह कहने के लिए पर्याप्त नहीं जानता कि हमारा ब्रह्मांड कारण और प्रभाव की एक बंद प्रणाली है जिसमें भगवान भी प्रवेश नहीं कर सकते। बुल्टमैन की प्रक्रिया असंगति सिद्धांत का उपयोग करके एक गैर-चमत्कारी,

अपरंपरागत यीशु को खोजने की गारंटी देती है। लेकिन क्या यह वास्तव में हमें असली यीशु के बारे में कुछ बताता है? खैर, रूप आलोचना से कुछ सकारात्मक सबक।

सबसे पहले, सुसमाचार के वृत्तांतों में ठीक वैसी ही सामग्री है जिसकी हम उन लोगों की प्रामाणिक यादों में अपेक्षा करते हैं जिन्होंने यादगार घटनाओं को देखा, खासकर अगर उन्हें इन घटनाओं को पढ़ाने का काम सौंपा गया था और फिर लिखने से पहले कुछ समय तक ऐसा किया था। उदाहरण के लिए, हम व्यापक रूपरेखा देखते हैं। तो, व्यापक रूपरेखा के संबंध में सभी सुसमाचार एक जैसे हैं, है न? एक सामान्य अनुक्रम, अवधि का अवलोकन।

हम कई एकल, सरल घटनाएँ, यादगार अवसर, किस्से, ऐसी ही चीज़ें देखते हैं। हम कुछ क्रम देखते हैं। इनमें छोटी-छोटी और बड़ी दोनों तरह की चीज़ें और उनके बीच का अंतरसंबंध शामिल होता है।

हम रूपों और पूर्णांकन का निरीक्षण करते हैं। वैसे, ये कई व्यक्तियों के माध्यम से मौखिक संचरण की तुलना में एक व्यक्ति द्वारा मौखिक दोहराव की अधिक विशेषता है। यात्रा मंत्रालय में सामग्रियों का बार-बार पुनः उपयोग इस रूप में प्रभावशाली कथनों और चमत्कारों को आकार देने की ओर प्रवृत्त होगा।

एक व्यक्ति सोच-समझकर और अनुभव से सीखता है कि कहानी सुनाने से बात कैसे समझ में आती है या नहीं आती है और वह बिना ज़्यादा शब्दों के कैसे उसमें शामिल होता है और कैसे उससे बाहर निकलता है। तो यह हमारे सबक में से एक है। सुसमाचार के वृत्तांतों में ठीक वैसी ही सामग्री है जिसकी हम प्रामाणिक यादों में अपेक्षा करते हैं।

दूसरा, फॉर्म आलोचना अत्यधिक संदेहपूर्ण है। अगर इसे कहीं और लागू किया जाता, तो हम अतीत के बारे में बहुत कम जान पाते। कुछ संदेह मददगार होता है, लेकिन बहुत ज़्यादा संदेह से आप अपनी ज़रूरत की बहुत सी चीज़ें खो देते हैं।

एक बार जब हम जीवित लोगों से आगे निकल जाते हैं, तो हमें लिखित दस्तावेजों और मौखिक परंपराओं पर भरोसा करना चाहिए। फिल्मों और वीडियो पर लेखन से ज़्यादा भरोसा नहीं किया जा सकता। तीसरा, फॉर्म आलोचना ने यह दिखाकर सकारात्मक योगदान दिया है कि हमारे पास सुसमाचारों में गैर-मसीही, गैर-चमत्कारी, विशुद्ध रूप से मानव यीशु की कोई परंपरा नहीं है।

यदि हम बाल्टीमोर द्वारा उन्हें बाहर फेंकने से पहले आदिम रूपों को लेते हैं, तो हमारे पास अभी भी चमत्कार और मसीहाई दावे हैं। यीशु ने खुद को पाप क्षमा करने में सक्षम माना, पिता के साथ घनिष्ठ संबंध का दावा किया, मानव होने के बावजूद अद्वितीय रूप से दिव्य होने का दावा किया, ये सभी बाल्टीमोर के बाद के लोगों द्वारा नोट किए गए थे। बाल्टीमोर को इस सामग्री को बाहर फेंकने के लिए व्यापक विश्वदृष्टि धारणाओं के साथ रूप आलोचना से परे जाना चाहिए।

सुसमाचारों का मसीह उन लोगों के लिए विरोधाभासी बना हुआ है जिन्होंने अलौकिकता को खारिज कर दिया है। खैर, हम यहाँ संपादन आलोचना की ओर रुख करने जा रहे हैं, लेकिन आइए एक पल के लिए रुकें।

